65

''सब कुछ नया''

(21:1-8)

प्रकाशितवाक्य में बहुत सी चीजें हैं। हमने ''एक नया नाम'' (2:17; 3:12), ''नया यरूशलेम'' (3:12; देखें 21:2) और ''नया गीत'' (5:9; 14:3) देखा था। अब अध्याय 21 में हम ''नये आकाश और नई पृथ्वी'' (आयत 1) के बारे में पढ़ेंगे और यह घोषणा हमें प्रभु से मिलती है कि ''देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं'' (आयत 5)। उस अन्तिम वाक्य में ज़ोर ''नया'' शब्द पर है, जिसमें मूल धर्मशास्त्र में कहा गया है कि ''देख, *नया* सब कुछ कर देता हूं मैं।'' पुस्तक में यह कुछ में से एक बार है कि परमेश्वर ने स्वयं बात की यानी[1] स्पष्टतया उसकी बातों का विशेष महत्व होना था।

मुझे नई चीज़ें पसंद हैं। बचपन में मुझे नई क्लास आरम्भ होने पर अच्छा लगता था क्योंकि मुझे नये कपड़े, नई किताबें और नई तख़्तियां और पैंसिलें मिलती थीं। वर्षों से मुझे किसी नई चीज़ को देखना, महसूस करना और सूंघना अच्छा लगता है। उम्र बढ़ने के साथ मुझे उस देश की ललक हो रही है जहां *सब कुछ* नया है।

मेरा मानना है कि प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5 हमें उस देश के बारे में बताता है, जिसे हम स्वर्ग कहते हैं। उन अध्यायों के लिखे जाने से पहले समय-समय पर परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने उस जगह की झलकियां दी थीं, परन्तु लोगों का मन और तरस जाता था। बैटसेल बैरट बैक्सटर ने लिखा है:

> जब बाइबल की छयासठ में से पैंसठ पुस्तकें पूरी हो गईं, जब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लगभग पूरी लिखी जा चुकी थी, जब हर युग के लिए परमेश्वर के लिखित वचन के अन्तिम काल के केवल आठ अतिरिक्त पद रहते थे तो परमेश्वर ने मनुष्य को स्वर्ग की अपनी तस्वीर दी।[2]

अध्याय 21 और 22 प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सबसे प्रसिद्ध भाग हैं। कई बाइबलों में प्रकाशितवाक्य के आरम्भिक पृष्ठ नई बाइबल खरीदने के समय बिल्कुल साफ़ होते हैं, परन्तु बार-बार पढ़ने और शायद आंसुओं के दागों से अन्तिम दो अध्याय फट जाते हैं। मनुष्य के मन को इससे अधिक और किसी ने शान्ति नहीं दी है।

इस पाठ में हम 21:1-8 का अध्ययन करेंगे, जो उस जगह का परिचय और संक्षेप बताता है, जहां सब कुछ नया हो जाएगा।

''*क्या* यह वचन हमें स्वर्ग के बारे में बताता है?''

वचन पाठ में जाने से पहले हमें यह चर्चा कर लेनी चाहिए कि क्या अध्याय 21 और 22 स्वर्ग की बात ही *करते* हैं।

पिछले पाठ में मैंने उल्लेख किया था कि कुछ टीकाकारों का मानना है कि 20:11-15 परमेश्वर के अस्थाई न्यायों में से एक (विशेषकर रोम के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय) के विषय में है। वैसे ही कई यह मानते हैं कि 21:1-22:5 का उद्देश्य पृथ्वी पर कलीसिया की, विशेषकर रोमी सताव के अन्त के बाद कलीसिया की विजय की तस्वीर बनाना है।[3] मैंने मान लिया कि 20:11-15 अस्थाई न्याय की बात हो सकता है, परन्तु यह विश्वास करने के मैंने अपने कारण बताए थे कि यह वचन बड़े और अन्तिम न्याय के दिन की बात करता है। वैसे ही मैं मानता हूं कि 21:1-22:5 पृथ्वी पर आदर्श कलीसिया की तस्वीर बना सकता है,[4] परन्तु मेरा मानना है कि यह वचन आत्मा के निवास अर्थात स्वर्ग के बारे में बताता है। डेनिय्यल रस्सल ने लिखा, ''हर युग में इस वचन में कलीसिया ने स्वर्ग का विवरण ढूंढ़ लिया है।''[5] हैरल्ड हेज़लिप ने निष्कर्ष निकाला, ''प्रकाशितवाक्य के इस अन्तिम भाग का मुख्य विषय छुड़ाए हुओं का भविष्य है।''[6]

पिछले पाठ में मेरे इस विश्वास के कारणों पर ध्यान दें कि 20:11-15 अन्तिम न्याय है। यदि मैं उस विषय में सही हूं तो मुझे स्वर्ग की तस्वीर दिखाते अध्याय 21 और 22 पर सही होना चाहिए। यदि हमने ''वर्तमान आज्ञा, मनुष्यजाति के अन्तिम न्याय और दुष्टों को दण्ड की बात देखी है,'' तो ''यह तर्कसंगत है कि क्रम में अगला दृश्य कलीसिया के समय के आगे परमेश्वर के साथ विश्राम करने के लिए आने की महिमा की तस्वीर होगी।''[7]

अतिरिक्त कारण दिए जा सकते हैं कि मैं क्यों मानता हूं कि 21:1-22:5 स्वर्ग की बात हैं:

(1) इस्तेमाल की गई भाषा उससे मेल खाती है, जो हमें बाइबल के अन्य हवालों से स्वर्ग के विषय में मिलता है।

(2) यह प्रतिज्ञा कि परमेश्वर ''हर आंसू पोंछ'' डालेगा (21:4) पहले मर चुके लोगों को 7:17 में दी गई प्रतिज्ञा ही है। स्पष्टतया यह इस जीवन की नहीं, बल्कि अगले जीवन के लिए प्रतिज्ञा है। इस संसार में परमेश्वर हमारे दु:खों में हमें शान्ति देता है: परन्तु अगले संसार में वह हमारे दु:खों को *मिटा* देगा।

(3) ''जय पाने वालों'' (21:7) की विरासत में दुष्टों के भविष्य से भिन्नता की गई है (21:8)। जैसे धर्मियों को मिलने वाली आशिषें ''युगानुयुग'' (22:5) रहेंगी, वैसे ही अधर्मियों का श्राप भी ''युगानुयुग'' के लिए है (20:10; देखें 20:15; 21:8)।

(4) यह पद ''नये आकाश और नई पृथ्वी'' पर पतरस की शिक्षा से बहुत मेल खाता है। होमेर हेली का अवलोकन है:

> नये आकाश और नई पृथ्वी के पतरस के विवरण के सावधानी पूर्वक अध्ययन (2 पतरस 3) से एक चौंकाने वाले समांतर का पता चलता है, जिसका वर्णन

> यूहन्ना करता है। अधर्मियों के न्याय और विनाश की हर बात (2 पतरस 3:7; प्रकाशितवाक्य 20:13) और नये आकाश और नई पृथ्वी के आने से पहले (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1) वर्तमान आकाश और पृथ्वी के जाने (2 पतरस 3:7; प्रकाशितवाक्य 20:11) का संकेत करती है। पतरस और यूहन्ना दोनों ने कष्ट के द्वारा दोषमुक्त और शुद्ध की गई आज की कलीसिया के बजाय अन्तिम न्याय और उसके बाद होने वाली बातें लिखी हैं ... पतरस और यूहन्ना ने न्याय के बाद का अन्तिम और अनन्त क्रम लिखा।[8]

(5) जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिया गया था, यदि प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्याय ''एक जैसे'' ही हैं तो पुस्तक का समापन कहीं न कहीं प्रतिकर्ष पर बन्द हो जाता है। अधिकतर लेखक यह मानते हैं कि प्रकाशितवाक्य 20 और 21 में प्रकाशितवाक्य ही नहीं, बल्कि पूरी बाइबल के लिए चरम मिलता है। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने पूछा कि यदि उसके पाठकों की बाइबलों से प्रकाशितवाक्य का इक्कीस अध्याय निकाल दिया जाए तो उन्हें कैसा लगेगा: ''मुझे लगता है कि जीवन के बाकी समय 'खोई हुई डोरी' की बात रह-रहकर आपको सताती रहेगी। यह हेंडेल के 'मसायाह' में से 'हैलेलुय्याह कोरस' को निकालने जैसा होगा।''[9]

यह मानने वाले कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पृथ्वी पर कलीसिया का चित्रण है, ध्यान दिलाते हैं कि इन वचनों में मसीहा के राज्य/कलीसिया की कई अभिव्यक्तियों से जुड़ी भविष्यवाणियां पुराने नियम में मिलती हैं। वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि ''नया यरूशलेम'' से जुड़े कई शब्दों का इस्तेमाल और कहीं कलीसिया के सम्बन्ध में किया गया है। मुझे इस दावे पर संदेह तो नहीं है, परन्तु मैं आपका ध्यान कलीसिया और स्वर्ग के निकट बल्कि अलग न किए जा सकने वाले सम्बन्ध की ओर दिलाऊंगा।

कलीसिया और स्वर्ग एक ही वास्तविकता के दो घटक हैं। उदाहरण के लिए दोनों को ''राज्य'' कहा गया है। ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल उस क्षेत्र के लिए किया गया है, जिस पर परमेश्वर शासन करता है। इस वर्तमान युग में इसकी सांसारिक अभिव्यक्ति को कलीसिया कहा जाता है (मत्ती 16:18, 19), जबकि स्वर्गीय पहलू को केवल स्वर्ग कहा गया है (मत्ती 6:9, 10, 20)।[10] इसी कारण नये नियम के लेखक राज्य *में* (अन्य शब्दों में, कलीसिया में; देखें कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28; प्रकाशितवाक्य 1:6, 9; 5:10), *होने* की बात कर पाए जबकि इसके साथ ही वे एक दिन राज्य *में* (यानी स्वर्ग में; देखें प्रेरितों 14:22; 2 तीमुथियुस 4:18; याकूब 2:5; 2 पतरस 1:11) *प्रवेश करने* की राह देख रहे थे ।[11]

कलीसिया और स्वर्ग के बीच निकट सम्बन्ध के कारण, कलीसिया के (मसीही) लोगों को वर्तमान में मिलने वाली आशिषों को स्वर्ग के आनन्द का पूर्वस्वाद माना जा सकता है। इस उदाहरण पर विचार करें: परमेश्वर अपनी कलीसिया में बपतिस्मा लेने वाले हर व्यक्ति को अपना आत्मा देता है (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। इस दान के विषय में पौलुस ने लिखा, ''... तुम पर ... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल

लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है'' (इफिसियों 1:13, 14क)। बयाना पेशगी रकम होती है, जो आमतौर पर सौदा पक्का करने के लिए अग्रिम राशि होती है। परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति इस समय पाना हमारी अनन्त मीरास की ''गारंटी'' ही नहीं उस मीरास अर्थात उस समय का जब हम परमेश्वर के साथ उससे निकट सम्बन्ध का आनन्द लेंगे, जो अब है, एक *पूर्वस्वाद* भी है (प्रकाशितवाक्य 21:3)।

इसलिए मुझे इससे आश्चर्य नहीं होता कि पुराने नियम के भविष्यवक्तओं ने मसीहा के राज्य के आने की बात करने के लिए प्रकाशितवाक्य 21 और 22 के शब्दों का ही इस्तेमाल किया। मुझे यह जानकर भी आश्चर्य नहीं होता कि कलीसिया में होने वाली आशिषों को बताने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों का इस्तेमाल स्वर्ग में मिलने वाली आशिषों के विषय में बताने के लिए किया जाता है। कलीसिया लोगों को परमेश्वर की ओर वापस लाने के लिए बनाई गई है ताकि अन्ततः पृथ्वी के स्वर्गलोक में खोए (उत्पत्ति 2; 3) लोगों को स्वर्गीय स्वर्गलोक में वापस लाया जा सके (प्रकाशितवाक्य 22:1, 2)।

21:1–22:5 पर चर्चा करने पर मेरा विचार यह है कि ये वचन स्वर्ग की बात करते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारी चर्चा में कलीसिया को नज़रअंदाज़ कर दिया जाएगा। हम *महिमा पाई हुई* कलीसिया अर्थात परमेश्वर के लोगों को सनातन आशिषों का आनन्द लेते देखेंगे। इन अध्यायों में आमतौर पर *लोगों* (कलीसिया) और *स्थान* (स्वर्ग) में अन्तर करना अक्सर कठिन हो जाता है।

''यह वचन हमें स्वर्ग के बारे में *क्या* बताता है?''

जैसा कि हमने पहले देखा है, पहली 8 आयतों में ज़ोर आकाश के *नये पन* पर है। आत्मा की प्रेरणा से यूहन्ना ने यह ज़ोर देने के लिए कि स्वर्ग कितना अद्‌भुत होगा, मानवीय भाषा की सीमाओं को विस्तार दिया।

एक नया वातावरण (21:1)

प्रेरित ने आरम्भ किया, ''फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा,[12] क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी'' (आयत 1क)। पिछले पाठ में हमने देखा था कि परमेश्वर के ''सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिए जगह न मिली'' (20:11)। इसका एक उद्देश्य ''नया आकाश'' और ''नई पृथ्वी'' के लिए मार्ग तैयार करना था।

''नई पृथ्वी'' वाक्यांश को मिलाना लेखकों को उलझा देता है। कई लोग मरम्मत की हुई भौतिक पृथ्वी की विस्तृत शिक्षाएं बनाते हैं। परन्तु बाइबल स्पष्ट कहती है कि भौतिक संसार नष्ट हो जाएगा।[13] यीशु ने स्पष्ट कहा कि ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे'' (मत्ती 24:35; देखें मत्ती 5:18)। इब्रानियों के लेखक ने लिखा कि सृजी गई वस्तुएं मिटा दी जाएंगी (इब्रानियों 12:27)। पतरस ने ज़ोर दिया कि ''आकाश आग से पिघल जाएंगे, और

आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे'' (2 पतरस 3:12)।

तो फिर यूहन्ना ने ''नई पृथ्वी'' शब्द का इस्तेमाल क्यों किया? पहली बात तो यह कि वह वस्तुओं के क्रम में नाटकीय *परिवर्तन* के वर्णन के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाले पूर्व लेखकों से शब्द उधार ले रहा था। यशायाह ने ''नया आकाश और नई पृथ्वी'' (यशायाह 65:17; देखें 66:22) वाक्यांश का इस्तेमाल मसीहा से जुड़ी अपनी भविष्यवाणी के लिए किया। पतरस ने स्वर्ग की ओर देखते हुए इसी शब्दावली का इस्तेमाल किया (2 पतरस 3:13)।

इसके अलावा परमेश्वर की प्रेरणा से यूहन्ना ने अपने पाठकों के लिए परिचित शब्दों का इस्तेमाल किया। मूसा ने पहली (भौतिक) सृष्टि का विवरण यह कहते हुए दिया था कि ''परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1)। अब यूहन्ना ने दूसरी (आत्मिक) सृष्टि का विवरण यह कहते हुए दिया कि उसने ''*नये* आकाश और नई पृथ्वी को देखा।'' मूसा के वाक्यांश ''आकाश और पृथ्वी'' में भी *पूरी* भौतिक (अस्थाई) सृष्टि को बताया गया था (देखें 4:24; 17:24), सो यूहन्ना के वाक्यांश ''नये आकाश और नई पृथ्वी'' में *पूरी* आत्मिक (सनातन) सृष्टि को लिया गया है।

''नया आकाश'' और ''नई पृथ्वी'' शब्दों से हम आश्वस्त होते हैं कि वर्तमान संसार के मिट जाने पर भी एक उपयुक्त वातावरण होगा, जिसमें हम रह सकते और कार्य कर सकते हैं। पौलुस के अनुसार पुनरुत्थान के बाद हम देह रहित आत्माएं नहीं होंगे, बल्कि हमें देहें दी जाएंगी, जो आत्मिक देहें यानी अविनाशी देहें, महिमा पाई हुई देहें होंगी, परन्तु वे होंगी देहें ही (1 कुरिन्थियों 15:35, 42-44; 2 कुरिन्थियों 4:16-5:4)।[14] इन आत्मिक देहों के रहने और काम करने के लिए जगह की आवश्यकता होगी। जैसे हमें शारीरिक देहों के लिए भौतिक आकाश और पृथ्वी की आवश्यकता है, वैसे ही हमारी आत्मिक ''आकाश और पृथ्वी'' की आवश्यकता होगी। यीशु ने प्रतिज्ञा की, ''मैं तुम्हारे लिए *जगह* तैयार करने जाता हूं'' (यूहन्ना 14:2)। पवित्र आत्मा तैयार की हुई उस जगह को ''नया आकाश और नई पृथ्वी'' कहता है।

परन्तु ''नया आकाश'' और ''नई पृथ्वी'' या दोनों जगहों के बीच के किसी काल्पनिक अन्तर पर अधिक परेशान न हों। लियोन मौरिस ने अवलोकन किया कि ''नया यरूशलेम उतरने के बाद आकाश और पृथ्वी में कोई अन्तर नहीं लगता।''[15] जी. बी. केयर्ड ने कहा कि उस समय ''लगता है दोनों में अन्तर को भुला दिया जाएगा।''[16]

आयत 1 के अन्त का वाक्यांश ''और समुद्र भी न रहा'' और उलझाने वाला है (आयत 1ख)।[17] सबसे प्रसिद्ध शिक्षा यह विचार है कि प्रकाशितवाक्य में ''समुद्र'' का विचार *अलगाव* है। भू-मध्य सागर ने यूहन्ना को असिया के अपने मसीही मित्रों से अलग किया था। वैसे ही प्रकाशितवाक्य में पहले समुद्र को सिंहासन के सामने (4:6) मनुष्यजाति को परमेश्वर से अलग करते हुए दिखाया गया है।[18] अब समुद्र जाता रहा था और परमेश्वर ने घोषणा कर दी कि वह अपने लोगों के साथ वास करेगा (21:3)।[19]

''समुद्र ... न रहा'' शब्दों को इस तथ्य को नाटकीय रूप देने के लिए दिया गया हो

सकता है कि आकाश और पृथ्वी बिल्कुल *अलग* होंगे। हमारी वर्तमान पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल है। यदि ऐसा न होता तो इस ग्रह पर जीवन इस रूप में सम्भव नहीं था। इसके विपरीत ''नई पृथ्वी'' में कोई समुद्र नहीं है। यह अलग ही है। यह *नई* है।

यह मुझे वचन के हमारे पाठ में दिए जाने वाले ज़ोर अर्थात स्वर्ग के *नयेपन* में वापस ले आता है। 1 से 8 आयतों में अनुवादित शब्द ''नया'' यूनानी के *kainos* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''गुण और किस्म में नया'' है।[20] यूहन्ना ''उसी बात का नया रूप नहीं देख रहा'' था।[21]

एक नया निवास (21:2क)

यूहन्ना ने आगे कहा, ''फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा'' (आयत 2क)। प्रकाशितवाक्य में पहले यीशु ने ''अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है'' (3:12) की बात की थी।[22]

नये नियम में कई बार ''पुराना'' (सांसारिक) यरूशलेम (पलिश्तीन देश का नगर) में और ''नया'' (स्वर्गीय) यरूशलेम में अन्तर बताया गया है। उदाहरण के लिए गलातियों की पुस्तक में पौलुस ने अपने रूपक में कहा कि हाजिरा ''आधुनिक यरूशलेम के तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर *ऊपर की यरूशलेम* स्वतन्त्र है, और वही हमारी माता है'' (गलातियों 4:25, 26)। फिर इब्रानियों के लेखक ने यहूदी वाद पर मसीहियत की सर्वश्रेष्ठता पर ज़ोर देते हुए लिखा:

> पर तुम [मसीही लोग] सिय्योन के पहाड़ के पास, *और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास* और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिसके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु ... के लोहू के पास आए हो, ... (इब्रानियों 12:22-24)।

यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य लिखने के समय ''पुराने'' यरूशलेम को बीस से अधिक वर्ष पहले रोमियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था; परन्तु मसीही लोग ''नये'' यरूशलेम अर्थात उस सनातन नगर की ओर देख सकते थे ''जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है'' (इब्रानियों 11:10; देखें इब्रानियों 13:14)। 21:10-22:5 में उस नगर का विवरण विस्तार में दिया गया है।

स्वर्ग के बारे में सोचते हुए हमें कस्बों और नगरों के उपयोगी पहलुओं पर विचार करना चाहिए। विलियम हैंड्रिक्सन ने कहा है, ''नगर से हमारा ध्यान स्थाई निवास, बड़ी जनसंख्या, सुरक्षा, सहभागिता और सुन्दरता की अवधारणाओं की ओर जाता है।''[23] स्वर्ग अलग रहने वाली जगह नहीं है क्योंकि वहां हम दूसरों के साथ रहेंगे, काम करेंगे और संगति रखेंगे।

''नये यरूशलेम'' ''को परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरते'' दिखाया जाना, कइयों की नजर में यह सबूत है कि यह पृथ्वी पर कलीसिया को कहा गया है। वे पूछते हैं, ''स्वर्ग, स्वर्ग से नीचे कैसे आ सकता है?''[24] स्पष्टतया वे इस बात को नहीं समझ पाते कि यह संकेत की भाषा है। ''नया यरूशलेम'' मूल रूप में आकाश से पृथ्वी पर नहीं उतरता यह पुरानी भौतिक पृथ्वी पर नहीं उतर सकता क्योंकि वह पृथ्वी तो जाती रही। इसके अलावा हमने पहले ही देखा है कि ''नये आकाश'' और ''नई पृथ्वी'' में किसी भी प्रकार का अन्तर शीघ्र ही मिट जाता है। ''स्वर्ग से नीचे आने'' शब्दों का उद्देश्य दिशा या गंतव्य का नहीं, बल्कि *ईश्वरीय मूल* का संकेत देने के लिए है।[25] ''सनातन आशीष मनुष्य की प्राप्ति नहीं, बल्कि परमेश्वर का दान है।''[26]

एक नया आनन्द (21:2ख)

अध्याय 21 कलीसिया की बात करता है,[27] परन्तु पृथ्वी पर कलीसिया की नहीं। मैंने पहले कहा था कि प्रकाशितवाक्य में कई बार स्थान (स्वर्ग) और लोगों (कलीसिया) में अन्तर करना कठिन हो जाता है। आयत 2 इस बात का उदाहरण है। नगर का रूपक इस्तेमाल करने के बाद यूहन्ना ने एक और संकेत दिया: राजधानी ''उस *दुल्हन* के समान थी, जो अपने पति के लिए श्रृंगार किए हो'' (आयत 2ख)। थोड़ी देर बाद नगर को ''दुल्हन अर्थात मेमने की पत्नी'' (आयत 9) कहा गया।

पौलुस ने *कलीसिया* को मसीह की दुल्हन कहा (इफिसियों 5:22-32; 2 कुरिन्थियों 11:2; देखें रोमियों 7:4)। उसने कहा कि समय आएगा जब यीशु ''एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफिसियों 5:27)। अधिकतर लेखक मानते हैं कि 21:2 ''परमेश्वर की कलीसिया, ... महिमा पाई हुई और अपने छुड़ाने वाले के साथ पूर्ण संगति के लिए तैयार'' बताता है।[28]

अध्याय 19 से ही हम ''मेमने के विवाह'' (19:7) और ''विवाह के भोज'' (19:9) का अनुमान लगा रहे हैं।[29] अन्त में 21:2 में हमें जश्न के उस समय में लाया जाता है। किसी ने कहा है कि ''स्वर्ग का सबसे हसीन पल'' मेमने का विवाह होगा।

''अपने पति के लिए श्रृंगार'' की हुई दुल्हन का संकेत कलीसिया की महिमा की बात करता है। निकाह करते हुए कई सालों में मैंने कभी कोई बदसूरत दुल्हन नहीं देखी है; ऐसा लगता है जैसे दुल्हन के अन्दर कोई ऐसी चीज़ है जो उसे चमकाकर उसके हुस्न को निखार देती है। इसके अलावा विवाह का रूपक अपनी कलीसिया के लिए यीशु के निरन्तर प्रेम की बात करता है।

एक नई निकटता (21:3, 7ख)

यूहन्ना ने कहा, ''फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना[30]'' (आयत 3क)। हमें बोलने वाले की पहचान नहीं बताई गई; हो सकता है कि यह

चार प्राणियों में से एक हो।[31] आवाज़ ने कहा, ''देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों की बीच में है'' (आयत 3ख)। यह हमें इस्राएल की छावनी के बीच में जंगल में खड़े तम्बू का स्मरण कराता है। तम्बू इस्राएलियों के लिए सबूत था कि परमेश्वर उनके साथ है।

आवाज़ ने आगे कहा, ''वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे,[32] और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा''[33] (आयत 3ग)। आयत 7 में प्रभु ने यह ज़ोर देते हुए कि ''मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा'' (आयत 7ख) इस नये सम्बन्ध की निकटता पर पुनः जोर दिया।[34]

यह अब मिलने वाले आनन्द का श्रेष्ठ उदाहरण है, जो स्वर्ग में पूर्ण हुआ। विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां बनते हैं (गलातियों 3:26, 27; 4:7)। यूहन्ना ने लिखा, ''देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना'' (1 यूहन्ना 3:1)। हम अब प्रभु के साथ विशेष सम्बन्ध का आनन्द लेते हैं और हम उसकी निकटता और उसके प्रेम को जानते हैं। परन्तु फिर परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने पर जब उसका प्रेम हमारे इर्द-गिर्द होगा और हमें भरपूर कर देगा *तो* हमें सचमुच समझ आएगी कि उसकी सन्तान होने का क्या अर्थ है!

एक नई कोमलता (21:4)

इस नई निकटता का क्या परिणाम होगा? पहले तो परमेश्वर ''उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा;[35] और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं'' (आयत 4)।

पाप के इस संसार में प्रवेश करने के समय से आसुंओं के समुद्र बहने पर विचार करें। स्वर्ग में परमेश्वर हर आंसू सुखा देगा! (जब एक छोटी लड़की ने इसे पढ़ा तो उसने कहा ''परमेश्वर के पास बहुत बड़ा रूमाल होगा!'') मूल धर्मशास्त्र में कहा गया है कि वह ''उनकी आंखों *में से* हर आंसू पोंछ'' डालेगा। परमेश्वर हमारे आंसुओं को सुखाएगा ही नहीं, बल्कि वह उस कारण को भी मिटा देगा जिससे आसूं आते हैं।

हमारे आसुंओं का मुख्य कारण मृत्यु है। हम में से अधिकतर लोगों ने खुली कब्रों के पास खड़े होकर अपने किसी प्रियजन को अलविदा कहा है। स्वर्ग में ''मृत्यु रहेगी नहीं'' (देखें 20:14)। इस प्रकार उत्पत्ति 3 का श्राप वापस ले लिया जाएगा (देखें उत्पत्ति 3:3, 19)!

न ही ''कोई पीड़ा पुकारना या कष्ट'' है क्योंकि ''पहली बातें जाती रही हैं।'' संसार में पाप के प्रवेश करने के समय से लेकर हमारे जीवनों को नाश करने वाली हर बात मिटा दी जाएगी।

आयत 4 स्वर्ग का विवरण सकारात्मक के बजाय नकारात्मक शब्दों में क्यों देती है? शायद इसलिए कि लोग प्रतिज्ञाओं को समझ सकें। आनन्द की समझ सबको नहीं होगी, परन्तु दुःख को सब जानते हैं। कई ऐसे हैं जो कभी हंसे नहीं, परन्तु रोए सभी हैं। कई हैं

जो कभी पीड़ा से निकले नहीं परन्तु कष्ट का अर्थ सबको मालूम है। क्या यह अहसास करना कि ऐसी भी जगह है जहां बीमारी और उदासी कल की बातें हैं, जहां हर कोई सदा-सदा के आनन्द को जान सकता है, अद्‌भुत नहीं है?

यदि मैं लोगों को समझा पाता कि ऐसा टापू था, जहां आयत 4 वाली आशिषों में से केवल *एक* जगह थी, जहां न आंसू थे, न मृत्यु और न पीड़ा तो हर कोई उस सुरिक्षत जगह जाने के लिए अपना सब कुछ बेच देता। कितना अजीब है कि ऐसी जगह है जहां ये *सब* प्रतिज्ञाएं सच होती हैं परन्तु फिर भी कई हैं जो वहां जाने या न जाने की परवाह नहीं करते!

एक नई संतुष्टि (21:6ग)

3 और 4 आयतों की प्रतिज्ञाओं से बहुत निकट सम्बन्ध रखने वाली प्रतिज्ञा आयत 6 में है। परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वह स्वर्ग में *हर* आवश्यकता को पूरा करेगा: ''मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा'' (आयत 6)।[36]

इस प्रतिज्ञा को समझने के लिए आपको अपने आप को प्रकाशिवाक्य के आरम्भिक पाठकों की जगह रखना होगा: वातावरण झुलसाने वाला था; पानी दूर-दूर तक नहीं था और जहां था वहां बहुत ही कीमती था। उस समय भूमि में से ठण्डे और ताजा पानी के चश्मे के बजाय मनुष्य की आत्मिक आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के उदाहरण से बढ़िया उदाहरण नहीं था।

बाइबल में प्यास को मनुष्य के भीतर की तड़प, जो निष्कलंक, समझ से बाहर और ऊंचे स्तर की है, के लिए इस्तेमाल किया गया है (भजन संहिता 36:9; 42:1; 63:1)। यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे'' (मत्ती 5:6)। उसने लोगों की प्यास ''जीवन के जल'' से मिटाने की प्रतिज्ञा की (यूहन्ना 4:10; देखें यूहन्ना 7:37)। इस जीवन में हमारी आत्मिक प्यास थोड़ी-बहुत बुझती है, परन्तु अगले जीवन में यह पूरी तरह से मिट जाएगी, जब यीशु हमें ''जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले'' जाएगा (प्रकाशितवाक्य 7:17)। *फिर,* हम ''जीवन के जल की नदी, जो परमेश्वर और मेमने के सिहांसन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों-बीच बहती'' (22:1) है, विश्राम करेंगे।

ध्यान दें कि परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध ''सेंतमेंत'' अर्थात मुफ्त हैं। जो जोन्स ने सुझाव दिया, ''वे मनुष्य के लिए 'मुफ्त' हैं क्योंकि हम उन्हें न कभी कमा सकते हैं और न उनके हकदार हैं।''[37] कुछ चीज़ें हैं, जो सबसे धनवान व्यक्ति भी नहीं खरीद सकता और स्वर्ग उनमें से एक है। परमेश्वर का उसके अद्‌भुत अनुग्रह के लिए धन्यवाद हो!

एक नई गारंटी (21:5ख, 6क, ख)

हमें कैसे पता चल सकता हैं कि ये अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं सचमुच पूरी होंगी? प्रभु ने यहून्ना को बताया, ''लिख ले,[38] क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं'' (आयत 5ख; देखें इब्रानियों 6:18; 2 तीमुथियुस 2:13)। परमेश्वर की बात पर भरोसा किया जा

सकता है!

प्रभु ने आगे कहा, ''ये बातें पूरी हो गई हैं'' (आयत 6क)। वचन कहता है कि अक्षरश: ''*वे* पूरी हो गई हैं'' यानी परमेश्वर की हर प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी। उसकी प्रतिज्ञाएं इतनी पक्की हैं कि उन्हें ''पूरी हो गईं'' ही मान लिया जाता है।

भविष्य के बारे में हम आश्वस्त *क्यों* हो सकते हैं? क्योंकि परमेश्वर सनातन परमेश्वर है। उसने कहा, ''मैं अल्फा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं'' (आयत 6ख)।[39] ''अल्फा'' और ''ओमिगा'' यूनानी वर्णमाला के पहले और अन्तिम अक्षर हैं।[40]

A Ω

इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य के आरम्भ में किया गया था (1:8; 1:17; 3:14 भी देखें)। वहां इस विचार को रेखांकित किया गया कि प्रभु रोम से पहले था और रोम के खत्म होने के बाद भी रहेगा।[41] यहां यह ज़ोर देता है कि प्रभु जो आरम्भ करता है उसे पूरा भी करेगा। जो उसने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करेगा।[42] यानी परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं पर अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं (देखें 22:13)।[43]

एक नई पवित्रता (21:7क, 8)

वचन ने हमारे मनों को भविष्य की ओर देखने को लगा दिया है, परन्तु अगली आयत हमें रूखेपन से वापस वर्तमान में ले आती है: ''जो जय पाए,[44] वही इन वस्तुओं का वारिस होगा;[45] ...'' (आयत 7क)। पवित्र आत्मा का उद्देश्य अगले जीवन की व्यर्थ जिज्ञासा को संतुष्ट करना नहीं था, बल्कि घबराए हुए मसीहियों को प्रोत्साहित करना था।

''जो जय पाए'' वाक्यांश से हम परिचित हैं। सात कलीसियाओं के नाम पत्र में बार-बार इसका इस्तेमाल किया गया है (2:7, 11, 17, 26; 3:5, 12, 21)।[46] 21:7 में इसके इस्तेमाल में अन्य प्रतिज्ञाएं भी हैं। यानी प्रभु कहता है, ''यदि तुम इन आशीषों का आनन्द लेना चाहते हो तो तुम्हें जयवन्त होना पड़ेगा है। तुम्हें मरने तक विश्वासी रहना होगा'' (2:10)।

यदि जयवन्त होने के बजाय गलती, लालच या धमका कर किसी पर जय पा ली *जाए* तो? आयत 8 अविश्वासी लोगों का भविष्य बताती है:

> पर डरपोकों,[47] और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।

पहली शताब्दी के पाठकों के लिए इस आयत की विशेष प्रासंगिकता थी, जिन्हें प्रभु के वफ़ादार रहने या न रहने का निर्णय लेना आवश्यक था: ''डरपोक'' वे लोग थे, जिन्होंने सताव के भय को अपने ऊपर हावी होने दिया था (देखें 2:10)। ''अविश्वासी'' उन्हें

कहा गया जिनका विश्वास उन्हें गिरने से बचाने के योग्य नहीं था (14:12)। ''घिनौने'' उन्हें कहा गया जिन्होंने बड़े बाबुल के ''घृणित'' कामों में भाग लिया था (17:4, 5)।[48] ''हत्यारे'' वे थे जिन्होंने विश्वासी मसीहियों को मरवाने में योगदान दिया था (16:6; 17:6; 18:24)।[49] व्यभिचारी और टोन्हे वे थे जिन्होंने मूर्तिपूजा में भाग लिया[50] और विशेषकर वे जो कैसर की मूर्ति के सामने झुके थे (2:14, 20, 21; 9:21; 14:8)। ''झूठे'' उन लोगों के लिए परमेश्वर का अत्यंत कठोर उपनाम था, जिन्होंने यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने से इनकार किया था (देखें 14:5)।

सामान्य प्रासंगिकता भी बनाई जा सकती है। उनके पाप का फल आज हमें भी मिल रहा है। हमें अपने आप को उनसे बचाने की आवश्यकता है।[51]

सारांश (21:5क)

वचन की मुख्य प्रतिज्ञा कितनी अद्‌भुत है: ''और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं'' (आयत 5क)!

यह प्रतिज्ञा वर्तमानकाल में है। परमेश्वर ने पहले ही बहुत कुछ नया कर दिया है! हमारे पास ''नई आज्ञा'' (यूहन्ना 13:34) के साथ नई वाचा है (2 कुरिन्थियों 3:6; इब्रानियों 8:8, 13; 9:15; 12:24)। मसीह में हम नई सृष्टि हैं (2 कुरिन्थियों 5:17; देखें गलातियों 6:15; इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 3:10)। हम ''नये और जीवित मार्ग'' में हैं (इब्रानियों 10:20)। फिर भी एक दिन *सब कुछ* नया कर दिया जाएगा! क्या इससे आपका स्वर्ग में जाने का मन नहीं करता? क्या इससे आपको स्वर्ग में जाने की पीड़ा नहीं होती?

स्वर्ग तैयार लोगों के लिए तैयार की हुई जगह है। क्या आप स्वर्ग में जाने के लिए *तैयार* हैं? क्या आपने विश्वास और आज्ञा पालन के द्वारा प्रभु की करुणा और अनुग्रह को ग्रहण किया है (मत्ती 7:21)? क्या आपने अपने पापों से मन फिरा लिया है (लूका 13:3)? क्या आपने बपतिस्मा लेकर अपने विश्वास को व्यक्त किया है (मरकुस 16:16)? क्या आप उस प्रतिज्ञा में बने रहे (प्रकाशितवाक्य 2:10)? क्या यह हो सकता है कि आपने इस संसार की चिन्ताओं और दबावों को अपने मन में से प्रेम को निकालने दिया? (देखें मत्ती 13:21, 22.)

मनुष्य इस संसार में चाहे जो भी प्राप्त कर ले यदि वह स्वर्ग को खो देता है तो सब व्यर्थ होगा; और यदि अन्त में किसी को ''धन्य, हे अच्छे और विश्वास योग्य दास'' सुनने को मिले तो उसका जीवन असफलता नहीं होगा । यदि आप मसीह के सेवक नहीं हैं तो आज ही बन जाएं!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो पहले मुख्य प्वाइंट में सब कुछ बताना आवश्यक नहीं होगा। परन्तु यदि आप उस सामग्री का इस्तेमाल करने का निर्णय लेते हैं तो कलीसिया और स्वर्ग (अन्य शब्दों में, पृथ्वी पर राज्य और स्वर्ग में राज्य) की तुलना करते हुए ''अब'' और ''तब'' पर चार्ट बनाएं। पहले कॉलम में कलीसिया में इस समय मिलने वाली आशिषों की सूची दी जा सकती है जबकि दूसरे कॉलम में दिखाया जा सकता है कि वे आशिषें पूर्ण और सम्पूर्ण रूप में स्वर्ग में ही मिलेंगी।

सामान्य रूप में स्वर्ग पर[53] या विशेष रूप से वचन के हमारे पाठ पर प्रचार सामग्री की कमी नहीं है। न ही जैसे ''नया आकाश और नई पृथ्वी''; ''पूरा हुआ है''; ''नये की प्रतिज्ञाएं''; ''*सचमुच का* 'नया युग'।'' KJV का इस्तेमाल करें तो ''और नहीं'' शीर्षक से प्रवचन दिया जा सकता है।

वचन के हमारे पाठ के छोटे भाग पाठों के आधार का काम कर सकते हैं। ''नरक में कौन क्या है'' पर प्रचार करने के लिए आप 21:8 का इस्तेमाल कर सकते हैं। ''चीज़ें जो स्वर्ग में नहीं होंगी'' पर पाठ के आरम्भिक बिन्दू के रूप में 21:4 का इस्तेमान किया जा सकता है (देखें 21:1, 22, 23, 27; 22:3, 5)।

चाहें तो अध्याय 21 और 22 का पूरा अध्ययन किया जा सकता है। वियर्सबे ने यह रूपरेखा दी थी: (1) नगर के लोग (21:1-8); (2) नगर का स्वभाव (21:9-22:9); (3) नगर की चुनौती (22:6-21)।

टिप्पणियां

[1]परमेश्वर ने 1:8 में बात की हो सकती है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 87 पर उस आयत पर नोट्स देखें।) उसने 16:1 और 16:17 में बात की हो सकती है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''जब परमेश्वर स्मरण करता है'' और ''अपनी परेशानियों का दोष परमेश्वर के सिर मढ़ना'' देखें।) [2]बैटसेल बैरेट बेक्सटर, *इफ़ आई लिफ़्टेड अप* (नैशविल्ले: गास्पल एडवोकेट कं., 1956), 115. [3]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले कुछ लोग एक और व्याख्या करते हैं। उनका मानना है कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 वाला नया यरूशलेम मसीह के काल्पनिक हज़ार वर्ष के राज्य की तैयारी में मरम्मत किया हुआ पलिश्तीनी नगर है। यदि ''यरूशलेम'' को अक्षरश: लिया जाना है तो 21:16 के मापों का अर्थ भी ऐसे ही लिया जाना चाहिए। परन्तु पलिश्तीन की लम्बाई केवल 150 मील (240 कि. मी)और चौड़ाई 70 मील (112 कि. मी) है यानी इसमें 1500 वर्ग मील (2400 वर्ग कि. मी) नगर के लिए जगह नहीं है। [4]फिर यह मानने वालों के साथ मेरी कोई बड़ी असहमति नहीं है कि प्रकाशितवाक्य 21:1-21:5 आज पृथ्वी पर कलीसिया की तस्वीर है, *जब तक* वे यह मानते हैं कि अन्तिम न्याय का दिन भविष्य में किसी समय होगा और उसके बाद दुष्ट अन्तकालिक नरक में और धर्मी अनन्तकालिक स्वर्ग में चले जाएंगे। [5]डेनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1935), 235. [6]हैरोल्ड हैज़लिप,

द लॉर्ड रेन्स: ए सर्वे ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन (अबिलेन, टैक्सस: हैरोल्ड ऑफ़ ट्रुथ, तिथि नहीं), 22. [7]होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 404. [8]वही., 405-6. [9]अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेजेस फ़ॉर ट्रब्लड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 122. [10]परमेश्वर के राज्य की सामान्य चर्चा के लिए इस पुस्तक में आए पाठ ''मसीह के साथ राज करना!'' में देखें। इस तथ्य पर कि कलीसिया राज्य है हमारे अध्ययनों में कई बार चर्चा हो चुकी है। (उदाहरण के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''अन्तिम तुरही'' में टिप्पणियां देखें।) राज्य के सांसारिक और स्वर्गीय पहलुओं को मिलाने वाला वचन इब्रानियों 12:22-24 है।

[11]नये नियम में ''परमेश्वर का राज्य'' या ''स्वर्ग का राज्य'' वाक्यांश मिलने पर आप कैसे जान सकते हैं कि ये शब्द कलीसिया के लिए या स्वर्ग के लिए? *संदर्भ से* ही आपको इसका अर्थ तय करना चाहिए। कई बार यह बताना कठिन होता है कि सांसारिक राज्य (कलीसिया) का अर्थ है स्वर्गीय राज्य (स्वर्ग) का, यह दोनों के निकट सम्बन्ध का एक और संकेत है। [12]आयत 1 में ''आकाश'' परमेश्वर के निवास को नहीं कहा गया। *वह* आकाश खत्म नहीं हुआ कि उसकी जगह नया आकाश हो, इसके बजाय जैसा कि पाठ में कहा गया है, यहां ''आकाश'' शब्द पुरानी (भौतिक) सृष्टि के विपरीत नई (आत्मिक) सृष्टि के भाग के लिए इस्तेमाल हुआ है। [13]इस तथ्य की कि ''नई पृथ्वी'' भौतिक नहीं होगी, चर्चा ह्यूगो मैक्कोर्ड, *द रॉयल रूट ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टवंट्यिथ सैंचुरी क्रिश्चियन, 1976), 49 में मिलती है। [14]नहीं, मुझे मनुष्य की *आत्मा* और उसे दी जाने वाली *आत्मिक देह* में अन्तर मालूम नहीं है। देह में होने के कारण मुझे आत्मिक संसार की समझ नहीं आ सकती। बेशक पौलुस के अनुसार इसमें अन्तर *होगा*। [15]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 237. [16]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 263. [17]ये शब्द अध्याय 20 के हो सकते हैं। 20:13 में ''समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे, दे दिया, औ मृत्यु और अधोलोक ने जो उनमें थे दे दिया।'' अब मृत्यु और अधोलोक की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए उन्हें फैंक दिया गया (20:14)। 21:1 का अन्त यह ज़ोर देते हुए कि ''समुद्र'' *भी* हटा दिया गया, उसके आगे की बात हो सकती है। [18]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' में 4:6 पर नोट्स देखें। [19]कई लेखक ज़ोर देते हैं कि यूहन्ना के समय में समुद्र को आतंक का स्रोत माना जाता था (देखें भजन संहिता 107:25-28; यशायाह 57:20; यहेजकेल 28:8)। वे ''समुद्र न रहा'' की व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए करते हैं कि विश्वासियों के अनन्त निवास में आतंक को मिटा दिया जाएगा। [20]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 2 (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 61. ''नया'' के लिए एक और यूनानी शब्द है, *neos* जो प्रकाशितवाक्य में नहीं मिलता।

[21]मौरिस, 236. [22]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य,1'' के पाठ ''कलीसिया जिसने जो कुछ उसके पास था उससे जो कुछ कर सकती थी, किया'' में 3:12 पर टिप्पणियां देखें। [23]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 240. बाइबल में किसी नगर का सबसे पहला उल्लेख उत्पत्ति 4:17 में मिलता है। [24]उत्तर में हम पूछ सकता हैं, ''यीशु ने क्यों कहा कि वह 'जगह तैयार' करेगा (यूहन्ना 14:2) जबकि 'जगह' (स्वर्ग) तो पहले ही थी?'' यीशु केवल इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि विश्वासियों के लिए *प्रावधान* किया जाना था। वैसे ही प्रकाशितवाक्य 21:2 ज़ोर देता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों (कलीसिया) के लिए जगह (स्वर्ग) तैयार की है। [25]प्रकाशितवाक्य में, ''स्वर्ग से उतरते'' शब्दों का मुख्य ज़ोर परमेश्वर की ओर से होने पर है (देखें 10:1; 16:21; 18:1; 20:1, 9)। [26]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 378. [27]अध्याय 21 और 22 में महिमा प्राप्त कलीसिया पर ज़ोर यह संकेत नहीं देता कि मसीही युग में छुड़ाए हुए लोग ही स्वर्ग में होंगे। (इस पुस्तक में ''आत्मा का घर'' पाठ में प्रकाशितवाक्य 21:12 पर नोट्स देखें।) परन्तु प्रकाशितवाक्य का उद्देश्य *सताई जा रही कलीसिया* को प्रोत्साहन देना था कि यह वह विजयी कलीसिया है जो प्रकाशितवाक्य के अन्तिम दो

अध्यायों के आकर्षण का केन्द्र है। [28]ए.प्लमर, *द पुलपिट कमैंट्री,* अंक. 22 *एपिस्टल्स ऑफ़ पीटर, जॉन एण्ड ज्यूड, द रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 510. [29]इस पुस्तक में ''मेमने के विवाह का भोज'' पाठ देखें। [30]बोलने वाले ने ऊंची आवाज़ का इस्तेमाल किया ताकि हर कोई सुन सके। यह बीस या अधिक बार में से अन्तिम बार था कि यूहन्ना ने ऊंची आवाज़ सुनी।

[31]बोलने वाले ने परमेश्वर के लिए बात की। परन्तु ऐसा लगा था जैसे बोलने वाले ने नहीं, स्वयं प्रभु ने बात की हो, क्योंकि परमेश्वर के लिए अन्य पुरुष इस्तेमाल किया गया था। [32]यूनानी धर्मशास्त्र में ''लोगों'' (बहुवचन) है। इसका उद्देश्य यह ज़ोर देने के लिए हो सकता है कि ''*हर* जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है'' (प्रेरितों 10:35)। [33]इसकी तुलना लैव्यव्यवस्था 26:12 और यहेजकेल 36:28 से करें। [34]देखें 2 कुरिन्थियों 6:17, 18. [35]हर आंसू पोंछ डालने की प्रतिज्ञा पहले 7:17 में दी गई थी। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''तूफ़ान से ऊपर उठना'' में 7:17 पर नोट्स देखें। [36]आयत 6ग की तुलना यशायाह 55:1 से करें। [37]जोअ डी. जोन्स, *विक्टरी इन जीज़स* (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1990), 305. [38]पुस्तक में यूहन्ना को कई बार ''लिखने'' का निर्देश दिया गया था। हर बार कोई असामान्य महत्व बताया गया या बताया जाने वाला था। कइयों का मानना है कि शायद इस अवसर पर यूहन्ना ने जो कुछ सुना और देखा जिसे वह लिखने के लिए रुका। [39]यूनानी धर्मशास्त्र में ''मैं'' ज़ोर देने वाला शब्द है: ''*मैं* अल्फ और ओमेगा हूं।'' [40] *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 88 पर ''सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स'' देखें। यदि आपने *अल्फा* और *ओमेगा* पर पहले चार्ट बनाया है तो आप इसे दोबारा इस्तेमाल कर सकते हैं।

[41]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 87 पर 1:8 पर नोट्स, उसी पुस्तक के पृष्ठ 113 पर 1:18 पर नोट्स ''प्रकाशितवाक्य, 1''' के पृष्ठ 34 पर 3:14ग पर नोट्स देखें। [42]अन्तिम दो वाक्य डी. टी. नाइल्स, *एज़ सीइंग द इनविज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1961), 94 से लिए गए थे। [43]तीन जगह जहां ''अल्फा और ओमेगा'' वाक्यांश का इस्तेमाल हुआ है (1:8; 21:6; 22:13) में कई बार शब्द पिता के लिए और कई बार पुत्र के लिए लगते हैं। दोनों ही बहुत निकट हैं इसलिए इससे इतना फर्क नहीं पड़ता कि वाक्यांश में किसी विशेष वचन में किसके बारे में कहा गया है। [44]''जय पाए'' (वर्तमानकाल) निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। इसका अनुवाद ''जय पर रहा है'' हो सकता है। पाप पर जय पाना जीवनभर का संघर्ष है। [45]'' 'वारिस' शब्द का अर्थ हिस्सा मिलना, विशेषकर विरासत के रूप में मिलना है (मत्ती 19:29; इब्रानियों 1:14; 1 पतरस 3:9; मत्ती 25:34; इफिसियों 1:14)'' (जोन्स, 305)। [46]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''हृदय की समस्या वाली कलीसिया'' पाठ में ''जो जय पाए'' पर नोट्स देखें। [47]KJV के अनुवाद ''डरपोकों'' से गलत इम्प्रेशन जा सकता है। यह स्वभाविका कायरों की बात नहीं है बल्कि वह भय है, जो किसी को सही काम करने से रोकता है। सबसे अधिक साहस उनमें देखा जाता है जो डरते हैं, परन्तु *फिर भी* वह करते हैं जो उन्हें करना चाहिए। [48]''घृणित'' शब्द, जैसा कि बाइबल में इसका इस्तेमाल हुआ है, आमतौर पर मूर्तिपूजा से जुड़े घृणित व्यवहारों के लिए है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करें'' में 17:4, 5 पर नोट्स देखें। [49]मसीही लोगों पर दूसरे मसीहियों का नाम बताने का दबाव डाला जाता था। अफसोस की बात है कि आरम्भिक लेखकों के अनुसार कुछ लोग उस दबाव में आ गए थे। [50]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पृष्ठ 58, 59 पर 9:21 पर टिप्पणियां देखें।

[51]जगह इस बात की अनुमति नहीं देती की मैं आज के मसीही लोगों के लिए इन शर्तों पर अपनी प्रासंगिकताएं दूं, परन्तु आप चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। आयत 8 में दिए गए पाप के हवालों के लिए अनुक्रमणिका (कन्कॉर्डैंस) में देखें। उदाहरण के लिए डरपोक होने पर 2 तीमुथियुस 1:7; इब्रानियों 10:38, 39 का इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको यह बताना होगा कि वचन यहां उनकी बात नहीं करता है जो पाप करके बाद में परमेश्वर की ओर आ जाते हैं बल्कि उन हठी लोगों की बात करता है जो इन पापों से मन फिराने से इनकार करते हैं। [52]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 277. [53]एक अच्छा स्रोत बर्टन

कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन द रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 490-97 है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपको नई चीजें अच्छी लगती हैं? प्रकाशितवाक्य में कुछ ''नई चीज़ें'' कौन सी हैं?
2. आपको क्या लगता है कि प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5 पृथ्वी पर कलीसिया का विवरण है या स्वर्ग में महिमा पाई हुई कलीसिया का?
3. क्या ''नई पृथ्वी'' *भौतिक* पृथ्वी होगी? यूहन्ना ने ''नया आकाश'' और ''नई पृथ्वी'' शब्दों का इस्तेमाल क्यों किया?
4. सांसारिक नगरों में अच्छाइयां और बुराइयां दोनों होती हैं। ''नया यरूशलेम'' वाक्यांश से मन में कौन सी अच्छाइयां आती हैं?
5. आयत 2 में ''दुल्हन'' कौन है? दुल्हन के रूपक से हमें प्रभु की कलीसिया के बारे में क्या पता चलता है?
6. आयत 3 बताती है कि परमेश्वर हमारे साथ ''रहेगा।'' जॉर्ज लैड ने कहा कि ''परमेश्वर और उसके लोगों में सीधी, न खत्म होने वाली संगति ही पूरे छुटकारे का लक्ष्य है।''[52] आप इससे सहमत हैं या नहीं?
7. आपको आयत 4 की कौन सी प्रतिज्ञा सबसे कीमती लगती है? क्यों?
8. आयत 6 में ''सेंतमेंत'' शब्द इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं?
9. ''अल्फा'' और ''ओमिगा'' क्या हैं? इन शब्दों का हमारे भरोसे के साथ क्या सम्बन्ध है कि परमेश्वर जो कहता है उसे पूरा करेगा?
10. 7 और 8 आयतों के अनुसार क्या स्वर्ग की आशिषें सबके लिए हैं? ''जो जय पाए'' वाक्यांश का क्या अर्थ है?
11. क्या आयत 8 में वर्णित पाप आज भी मिलते हैं? क्या वे हमारे जीवनों में भी आ सकते हैं?
12. अन्त में, जीवन में ''असफलता'' या ''सफल'' होना कौन तय करता है?